

बहुत दिन बीते हैं इहि रूप ।
तीन्यूं पन निजु विप्रान पति । षोये षेलत जूप ॥ टेक
नारि षेल सुत जीति जांनि जिय । कपट कांम गुन ठांनी ॥
ज्यूं मृग राग श्रवंन सेवत सर । लग तन मूरछा मांनी ॥ 1
काल पारधी बिषै राग रचि । मन मृग निकट बुलायौ ॥
इहिं डर डरि रघुनाथ जगत पति । सूर सरन तकिं आयौ ॥ 2